टिप्पणी

16

सामाजिक और शैक्षिक समस्याएं

व्यवस्था की कठिनाइयों के कारण जब समुदाय या समूह के उचित लक्ष्यों को प्राप्त करने में लोगों को जिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है उन्हें सामाजिक समस्यायें कहते हैं। लोग प्रताड़ित होते हैं, वंचित परिस्थितियों में रहते हैं, अच्छी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते, ईर्ष्या एवं भेदभाव का सामना करते हैं; ये सब सामाजिक समस्याओं के उदाहरण हैं। यह सब सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक सहित कई पहलू हैं जिन्हें कई दृष्टिकोणों से समाधान के प्रयासों की आवश्यकता है। भारतीय समाज वैश्विक बदलाव के दौर से गुजर रहा है। साथ ही साथ इस देश की एक बहुत पुरानी सांस्कृतिक विरासत है। आज भारत वैश्विक स्तर पर एक मजबूद देश बनने की आकांक्षा रखता है। लेकिन इन सभी दबावों के कारण कई समस्याएं सामने आ रही हैं; जैसे अशिक्षा, सामाजिक तनाव और लैंकिगक भेदभाव आदि जैसी कुछ मुख्य समस्याएं हैं। यह पाठ समाज में उपस्थित ऐसी ही कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आपः

- गरीबी, दहेज व नशे की लत जैसी महत्वपूर्ण समस्याओं के मनोवैज्ञानिक पहलुओं का वर्णन कर सकेंगे;
- इन समस्याओं के समाधान की विधियों पर चिन्तन कर सकेंगे; और
- बीच में स्कूल छोड़ देने, ठहराव एवं अपव्यय की चर्चा करने में सक्षम होंगे।

16.1 गरीबी

हमारे देश में बहुत से लोग गरीबी में जीते हैं। गरीबी किसी भी व्यक्ति तथा उसके परिवार की समानता, न्याय, गरिमा, स्वास्थ्य, आम जरूरतें, निजी सुरक्षा को नकारती हैं। गरीबी मूल रूप से

असमानताओं का परिणामस्वरूप होती हैं। गरीबी को वस्तुगत गरीबी की तरह परिभाषित किया जा सकता है जिसमें मुख्य रूप से साधनों की कमी होती है, जैसे आर्थिक साधनों की कमी जिसके कारण जीवन के समुचित स्तर को प्राप्त करना कठिन होता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि गरीबी जनसंख्या को दो भागों में बांटती है, एक वह जो समुचित जीवन स्तर पर जीने में सफल हैं, दूसरे वह जो ऐसा जीवन नहीं जी पाते।

व्यक्तिगत अनुभव व विचारों पर आधारित गरीबी वह होती है जो किसी व्यक्ति द्वारा अनुभव की गयी होती है या वह व्यक्ति विशेष का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। वंचना की स्थिति वह होती है जहां आम जनता की ही तरह विशेष अवसरों व अधिकारों की कमी होती है। जिसका अर्थ है किसी भी व्यक्ति के जीवन जीने की बुनियादी आवश्यकताओं की कमी होना। यह वातावरण की अनुपयुक्त स्थिति, दरिद्र अनुभवों तथा सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के लक्षणों का रूप ले सकते हैं।

चित्र 16.1

गरीबी के कारण व परिणाम

गरीबी को कारण के साथ परिणाम के रूप में समझने की आवश्यकता है। गरीबी के कई कारण होते हैं और उनसे कई अन्य समस्यायें जन्म लेती हैं। गरीबी का एक महत्वपूर्ण पहलू अभाव है। अभाव अर्थात अवसर की कमी, संसाधनों की कमी, दुर्बल आर्थिक स्थिति, उपलब्ध संसाधनों की कम उपयोगिता, आदि। शिक्षा और रोजगार एक दूसरे से संबंधित हैं, जो कम अवसरों से अधिक लाभप्रद करने के लिए नियोजित हैं। गरीबी के कई परिणाम हैं, जो व्यक्तियों पर पड़ने वाले शारीरिक व मनोवैज्ञानिक प्रभावों को लेकर आपस में संचार करते हैं। आइये हम गरीबी के कुछ प्रमुख परिणामों की जांच करें।

कुपोषण और विकासः कुपोषण शारीरिक और मानसिक विकास दोनों को प्रभावित करता हे। संतुलित भोजन, बच्चे को सक्रिय और खुश रखने में सहायता करता है। कुपोषण एवं सामाजिक दरिद्रता ये दो ऐसे प्रमुख कारण हैं जो मानसिक पिछड़ापन उत्पन्न करते हैं। गरीब परिवारों के बच्चे अपना जीवन सीमित भोजन, व्यापक संक्रमण, कमजोर स्वास्थ्य, अपर्याप्त प्रेरणा तथा माता–पिता में शिक्षा व जागरूकता की कमी के साथ आरम्भ करते हैं।

समाजीकरण पैटर्नः गरीबी के आधार पर समाजीकरण के स्वरूप का विश्लेषण अपर्याप्त उत्तेजना, बहुत कम या शिक्षा का न होना, रोल मॉडल की कमी तथा समवयस्कों द्वारा सामाजिक व भावनात्मक समर्थन की कमी के रूप में किया जा सकता है। इन सभी पहलुओं की कमी के कारण बढ़ते बच्चे के संज्ञानात्मक व भावनात्मक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

व्यक्तित्व का विकासः वंचित एवं गैर–वंचित समूहों के लिए व्यक्तित्व के विकास के कई अलग–अलग संरूपों का सुझाव दिया गया है। गैर वंचित बच्चों की तुलना में अति वंचित बच्चों में स्नायुरोग और अंतर्मुखता की सम्भावना अधिक होती है। अभाव का सम्बन्ध सामाजिक कुसमायोजन, अपरिपक्वता एवं पलायन से भी है। साथ ही साथ यह बच्चों को अपराध व बाहरी मौका परस्त अभिविन्यास की ओर अग्रसर करता है।

क्रियाकलाप 1

गरीबी के प्रत्यय को समझना

विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों से बातें करेंः मित्र, परिवार, पड़ोस, छात्र, कार्यरत व बेरोजगार व्यक्ति, झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाले व अन्य। प्रत्येक व्यक्ति से गरीबी को परिभाषित करने और भारत में गरीबी के पांच मुख्य कारणों को सूचीबद्ध करने के लिए कहें तथा इस सूची में अपने उत्तर को भी मिलायें और पदत्रों को सारणीबद्ध करें। आप, लोगों द्वारा बताए गए कारणों की बारम्बारता की गणना कर सकते हैं। प्राप्त जानकारियों की चर्चा अपने परिवार के साथ करें।

प्रोत्साहन का परिणामः पुरस्कार एवं दण्ड का अनुभव किसी भी व्यक्ति के प्रेरक अभिविन्यास का गठन करने में सहायक होता है क्योंकि गरीबी, उपलब्धि की आवश्यकता में कमी दूसरों पर निर्भर होने की आवश्यकता की ओर ले जाती है।

मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेपः गरीबी के कई कारण व परिणाम हैं, जो व्यक्ति, समूह और समाज को प्रभावित करते हैं। मनोवैज्ञानिक इस विचार को मानते हैं कि मानव विकास को व्यक्ति के अनुभवों द्वारा आकार मिलता है। किसी व्यक्ति को सहायता करने का उद्देश्य है कि किसी वंचित व्यक्ति के संज्ञानात्मक, प्रेरक और व्यवहार कौशल का निर्माण व समर्थन। इस प्रकार के मार्गदर्शन से समाज में प्रभावी कार्यकरण के लिए योग्यता के स्तर में वृद्धि होगी।

मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप वंचित तथा अलाभान्वित की सहायता तो करते हैं परन्तु हमें निम्नलिखित पहलुओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। सबसे पहले, निरंतर सहायता से मनोवैज्ञानिक निर्भरता तथा दूसरों पर निर्भरता की आदत बन जाती है। ऐसी परिस्थितियों के अन्तर्गत वंचित व्यक्ति आत्मनिर्भर नहीं बन पाएगा। दूसरा मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप को तीन स्तरों में बांटा जा सकता हैः व्यक्तिगत, सामुदायिक व सामाजिक स्तर। उदाहरण के लिए शिक्षा, सामाजिक नीति तथा आर्थिक सहायता तीनों के एक साथ बदलाव के दूरगामी प्रभाव हो सकते हैं। सामुदायिक भागीदारी, प्रतिबद्धता व कार्यक्रमों में प्राप्त सफलता कार्य करने की इच्छा को जगाती है।

पाठगत प्रश्न 16.1

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. गरीबी ..... और ..... गरीबी के सन्दर्भ में परिभाषित किया गया है।
2. वस्तुनिष्ठ गरीबी ..... की कमी है।
3. व्यक्तिपरक गरीबी ..... और ..... व्यक्ति द्वारा अनुभव को सन्दर्भित करती है।
4. आमतौर पर आम जनता के लिए उपलब्ध अवसरों और विशेषाधिकारों की कमी .... को सन्दर्भित करती है।
5. वंचित व्यक्ति का ....., ... और ..... कौशल में प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है।
6. गरीबी के लिए मनावैज्ञानिक हस्तक्षेप का ....., ... और .... स्तर पर काम करना चाहिए।

16.2 अन्य सामाजिक समस्याएं

नशे की लतः नशीली दवाओं की लत एक पुरानी समस्या है क्योंकि, इस सत्य के बावजूद कि नशीली दवा उसके लिए हानिकारक है, व्यक्ति उसकी खोज एवं निर्भरता के लिए तत्पर रहता है। प्रायः यह जानना कठिन होता है कि लोग नशे के आदि क्यों हैं, यह हो सकता है कि जोखिम वाले कारकों के संयोजन जैसे व्यक्तिगत शारीरिक रचना, समाजार्थिक स्तर, साथियों का दबाव, तनाव, अच्छे परिवेश की कमी, रोल मॉडल या उम्र आदि के कारण ऐसा होता है। एक व्यक्ति के जीवन में अनुवांशिक और पर्यावरणीय कारक, विकासात्मक, तथा परिपक्वता की अवस्थाओं में अन्तःक्रिया करते हैं। जितनी जल्दी कोई व्यक्ति इन दवाओं का आदी बनता है, यह लत उतनी ही जटिल होती जाती है। किशोरावस्था में यह एक आम समस्या एवं चुनौती होती है जब नये प्रयोगों के लिए साथियों का दबाव होता है। नशे की इस लत का सीधा संबंध अपरपध एव एचआईवी एवं एड्स से है। शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर भी इसका सीधा प्रभाव पड़ता है। इलाज द्वारा लोगों को इस लत से लड़ने में सहायता मिलती है, लेकिन नशे की लत की रोकथाम ही एक उत्तम विधि है। परिवार, स्कूल, कॉलेज, समुदाय तथा मीडिया का सहयोग इस लत से लड़ने का बेहतर विधियों के विकास में सहायक है। प्रसिद्ध व्यक्तित्व या लोकप्रिय व्यक्ति और प्रतिभाशाली युवक, नशा विरोधी अभियानों में भाग लेकर जागरूकता पैदा कर सकते हैं।

दहेजः दहेज जो शादी के समय लड़की के परिवार वालों द्वारा नकद, उपहार, संपत्ति और सामग्री के रूप में दूल्हे पक्ष को दिया जाता है, जो जीवन भर उपहार के रूप मे चलता रहता है। दहेज पहले शादी के खर्च में सहायता करने के रूप में दिया जाता था, लेकिन अब इसे

लड़की के बोझ के भुगतान के रूप में दूल्हे के परिवार को दिया जाता है। इसी पहलू के कारण परिवार में एक लड़की के जन्म को खर्च या बोझ के रूप में माना जाता है; और यदि परिवार गरीब हो तो यह दबाव और भी बढ़ जाता है। दहेज लेने व देने के कई कारण हैं। माता–पिता द्वारा अपनी लड़की के लिए चिन्ता, एक अच्छा व सुखी जीवन प्रदान करने की कामना ही उन्हें अधिक से अधिक दहेज का भुगतान करने पर मजबूर करती है। दहेज का भुगतान करने के लिए उच्च ब्याज दरों पर पैसा उधार लेने के कारण परिवार कर्ज के बोझ के नीचे दब जाते हैं।

दहेज एक सामाजिक प्रथा बन चुका है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलता आ रहा है। इस प्रकार की प्रथा बदलना बहुत कठिन होता है। इस प्रकार की प्रथा युवा लड़कियों को बड़े जोखिम में डाल देती हैं, क्योंकि जो लड़की अपने पति के घर कम दहेज लेकर जाती है, वह पति के परिवार की दया पर रहती है। उसके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है, उसे प्रताड़ित किया जाता है, सताया जाता है, और उससे हिंसा तक की जाती है। यह बहुत दुःख की बात है कि आज दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961 के होते हुए भी दहेज हत्यायें होती हैं, लेकिन यह कानून इस सामाजिक बुराई के उन्मूलन में कोई सहायता नहीं कर पा रहा है। प्रभावी कार्यान्वयन, समाज के सहयोग द्वारा एवं सक्रियता से इस बुराई के उन्मूलन में सहायता ली जा सकती है। लड़के–लड़कियों को शिक्षित किया जाए, एक दूसरे का सम्मान करना सिखाया जाए तथा दहेज ना लेने की सीख यह कुछ अन्य विधियां हैं जिनसे इस सामाजिक बुराई को समाप्त किया जा सकता है।

16.3 बीच में स्कूल छोड़ने वाले बच्चे, ठहराव और अपव्यय

शिक्षा का अधिकार एक मौलिक अधिकार है। तब भी हम ये पाते हें कि बच्चे एक बार विद्यालय में नामांकन के पश्चात भी विद्यालय छोड़ देते हैं। ''बच्चों द्वारा विद्यालय छोड़ने की दर'' को हम ''विद्यालय में नामांकन के पश्चात विद्यालय जाना छोड़ देने वाले बच्चों के अनुपात'' के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। तीस प्रतिशत बच्चे विद्यालय में पाँच वर्ष पूरे करने से पूर्व और पचास प्रतिशत, आठ वर्ष पूरे करने से पूर्व ही विद्यालय छोड़ देते हैं।

ठहराव और अपव्यय शिक्षा की व्यवस्था में दो महत्वपूर्ण अवधारणाएं हैं। शिक्षा किसी भी व्यक्ति के विकास और समाज के प्रति उसके प्रभावी योगदान दोनों के लिए आवश्यक है। जब किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त शिक्षा उसे कम या किसी प्रकार से सहायता न दे तो उसे अपव्यय कहते हैं। विकासशील बच्चे के लिए आवश्यक है कि वह शिक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान का प्रयोग करे अन्यथा यह संसाधनों का अपव्यय है। इसके अतिरिक्त शिक्षा प्रणाली मांग और पूर्ति में तालमेल रखे और विभिन्न शैक्षिक क्षेत्रों की ज्ञानात्मक सामग्री एवं पाठ्यक्रम में आवश्यकता के अनुरूप परिवर्तन करते रहना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता है तो शिक्षा में ठहराव आ जाता है। इस प्रकार प्राथमिक विद्यालय स्तर के छात्र स्कूल में दाखिला लेते हैं और कुछ वर्षों बाद स्कूल छोड़ देते हैं। यह आवश्यक है कि बच्चे को स्कूल में वापस दाखिला कराया जाए व उसकी शिक्षा पूरी करवायी जाए। अक्सर बच्चे असंतोषजनक प्रगति के कारण एक ही कक्षा में रह जाते हैं, जो स्कूल में आगे पढ़ने के लिए उन्हें हतोत्साहित करता है।

बीच में ही स्कूल छोड़ने, ठहराव और अपव्यय के विभिन्न कारण हैं। इन कारणों को समाजार्थिक, मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है। आसपास के क्षेत्रों में स्कूल की अनुपलब्धता, माता–पिता में शिक्षा की आवश्यकता को लेकर जागरूकता की कमी, गरीबी, शैक्षिक वातावरण का अभाव, परीक्षा में विफलता तथा आर्थिक कारणों से बच्चों का काम करना, स्कूल छोड़ने के प्रमुख कारण हैं। इसके अतिरिक्त स्कूली शिक्षा प्रणाली की प्रक्रिया व नियमों का कम समर्थन, बच्चों की आवश्यकता के प्रतिकूल पाठ्यक्रम, शिक्षा की गुणवत्ता में कमी एवं स्कूलों के खराब उपकरण जैस कई कारण हैं जो बीच में ही बच्चों के स्कूल छोड़ने के कारण बनते हैं।

सरकार द्वारा बीच में ही स्कूल छोड़ देने वाले बच्चों की दर को कम करने के लिए राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, सर्वशिक्षा अभियान, तथा मिड–डे मील जैसे कई सरकारी कार्यक्रम चलाए गए हैं। भारत वर्ष के केरल राज्य में उच्चतम साक्षरता दर है और अन्य राज्यों द्वारा भी स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की दर में कमी लाने के लिए अच्छे प्रयास किए जा रहे हैं।

उपर्युक्त सामाजिक समस्यायें जीवन के विभिन्न पहलुओं का उल्लेख करती हैं। आपने देखा होगा कि किस प्रकार ये समस्याएं एक दूसरे से संबंधित हैं और एक दूसरे को प्रभावित भी करती हैं; फिर भी इन समस्याओं का समाधान आसान नहीं है। सभी प्रकार की सहायता से ही इन समस्याओं का समाधान हो सकता है। मनोविज्ञान द्वारा मानव व्यवहार को समझना नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता अभिवृत्तियों, भावनाओं और व्यवहार के प्रतिमान में संशोधन महत्वपूर्ण है। इन परिवर्तनों को लाने में मनोवैज्ञानिक अन्य समाजिक मनोवैज्ञानिकों के साथ मिलकर योजनायें प्रदान कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 16.2

रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए:

1. ..... दिशा में पुरुष और महिला लिंग अनुपात प्रतिकूल हैं।
2. दो महिला नेता जो राष्ट्रीय स्तर पर नेताओं के रूप में उभरी ..... और ..... ।
3. नशीली दवाओं की लत एक पुरानी समस्या है जिसमें किसी व्यक्ति द्वारा .... और सम्मिलित हैं।
4. ..... उन छात्रों को संदर्भित करता है जो शुरू में प्रवेश लेने के कुछ वर्षों बाद स्कूल छोड़ देते हैं।
5. आरम्भ में छात्र विद्यालय से जुड़ते हैं और कुछ वर्ष पश्चात स्कूल छोड़ देते हैं इसके कारण बच्चे की शिक्षा पर खर्च हुए संसाधनों की ..... होती है।

आपने क्या सीखा

- गरीबी असमानाओं का परिणाम है।
- इसे व्यक्तिनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ मे परिभाषित किया जाता है।
- अभाव का तात्पर्य साधारण लोगों को उपलब्ध सुविधाओं और सुअवसरों से वचित होना।
- कुपोषण, समाजीकरण–प्रतिमान, व्यक्तित्व विकास, अभिप्रेरणात्मक परिणाम और मानसिक स्वास्थ्य गरीबी के कारण के परिणाम हैं।
- मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप का उद्देश्य व्यक्ति को ज्ञानात्मक, व्यवहारात्मक और अभिप्रेरणात्मक कौशलों के निर्माण का प्रशिक्षण देना है।
- नशीली दवाओं की लत और दहेज लेना आदि सामाजिक समस्यायें हैं।
- शैक्षिक ढांचे में स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की दर अधिक है। ठहराव और अपव्यय स्कूल छोड़ने वाले बच्चों से सम्बन्धित है।
- बच्चों के स्कूल छोड़ने, ठहराव और अपव्यय के अनेक कारण हैं– समाजार्थिक, मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

16.1

1. वस्तुनिष्ठ एवं व्यक्तिनिष्ठ
2. सम्पत्ति
3. प्रत्यक्ष ज्ञान, अनुभव
4. वंचना
5. संज्ञानात्मक, प्रेरक व व्यावहारिक
6. व्यक्तिगत, सामुदायिक और सामाजिक

16.2

1. महिलाएं
2. सरोजनी नायडू और इंदिरा गांधी
3. विद्यालय छोड़ देना

4. बर्बादी
5. बाध्यकारी दवा का सेवन, निर्भरता

पाठान्त प्रश्नों के लिए संकेत

1. खण्ड 16.1 देखें।
2. खण्ड 16.2 देखें।
3. खण्ड 16.3 देखें।